

स्कूल के माहौल, शिक्षक और छात्र संतुष्टि के बीच संबंध

Ravishankar Singh^{1*}, Dr. Ramashray Chauhan²

¹ Researcher, Capital University, Koderma

² Professor, Capital University, Koderma

सार - यह अध्ययन शैक्षिक सेटिंग्स के भीतर स्कूल के माहौल, शिक्षक संतुष्टि और छात्र संतुष्टि के बीच जटिल परस्पर क्रिया की जांच करता है। यह अनुमान लगाया गया है कि स्कूल का माहौल, जिसमें स्कूल समुदाय के भीतर समग्र वातावरण, मूल्य और पारस्परिक बातचीत शामिल है, शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा अनुभव की जाने वाली संतुष्टि के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है। माना जाता है कि एक सकारात्मक स्कूल माहौल प्रभावी शिक्षण और सीखने के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देता है, जिससे शिक्षकों और छात्रों के बीच उच्च स्तर की संतुष्टि होती है। यह शोध विभिन्न प्रकार के स्कूलों से व्यापक डेटा इकट्ठा करने के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार के संयोजन के साथ एक मिश्रित-तरीके दृष्टिकोण को नियोजित करता है।

कीवर्ड - स्कूल, माहौल, शिक्षक, छात्र संतुष्टि, संबंध

-----X-----

1. परिचय

लेखन प्रणाली के आविष्कार के बाद से मनुष्य ने विज्ञान को विकसित करने का प्रयास किया है। इसके अलावा, आज की दुनिया जहां हम रहते हैं वह लगातार बदल रही है और विकसित हो रही है और आज का जीवन भी ऐसे परिवर्तनों और विकास के साथ-साथ चल रहा है। इसलिए, संगठन और सामाजिक प्रणालियाँ; विशेष रूप से, शैक्षिक संगठनों को प्रबंधन के नए तरीकों के बारे में जानना आवश्यक है। शिक्षा प्रीस्कूल से शुरू होती है और ऑपरेशन, मेडिकल पेशेवर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, बिल्डर, कानून में वकील और कई अन्य जैसे उत्कृष्ट स्तर तक पहुंचती है। यथोचित प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में मित्रों के समूह में भी सामान्यता बनाए रखने के लिए इन स्तरों को प्राप्त करना आवश्यक है। इस तथ्य के कारण कि यह भविष्य का निर्णय करेगा और किसी को भी दृष्टि प्रदान करने और कल्पना करने में सहायता कर सकता है। शिक्षा और सीखना संस्कृति द्वारा स्थापित एक प्रकार की सामान्य प्रतियोगिता होगी, इसमें शामिल होने के साथ-साथ विशेष प्रतिस्पर्धा हासिल करने में सक्षम होना सभी के लिए अनिवार्य है। क्योंकि औपचारिक अध्ययन और स्तर के बिना आज की दुनिया में मनुष्य समग्र नहीं हैं। शैक्षिक वातावरण और अन्य शैक्षणिक संस्थान शिक्षा के बुनियादी ढाँचे को परिभाषित करते हैं। स्कूली शिक्षा हमें बुनियादी बातें प्रदान करती है। हम डिग्री पाठ्यक्रमों के दौरान अपनी रुचि के क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखते हैं, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाले शैक्षिक

वातावरण और ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने वालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम विशिष्ट शिक्षा अर्जित करने में मदद करते हैं। दूरस्थ शिक्षा कई लोगों के लिए बहुत मददगार साबित होती है। लेकिन शिक्षा केवल शैक्षणिक संस्थानों से प्राप्त शिक्षा तक ही सीमित नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं कि सीखना जीवन भर की कीमत है। बल्कि स्व-शिक्षा उस बिंदु पर शुरू होती है जहां संस्थागत शिक्षा समाप्त होती है। स्वयं सीखने की प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन भर चलती रहती है।[1]

विज्ञान मंत्रालय, उच्च शिक्षा और शैक्षिक संगठन कुछ सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक सामाजिक संगठन हैं जो भावी पीढ़ी के लिए मूल्यों और रीति-रिवाजों के चयन और प्रसारण की जिम्मेदारी संभालते हैं। शैक्षिक संगठन का न केवल छात्रों की अव्यक्त प्रतिभा के विकास और ज्ञान और क्षमताओं में वृद्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है, बल्कि हर देश के राष्ट्रीय वार्षिक उत्पादन और सकल उत्पादन में भी वृद्धि होती है।[2]

2. शैक्षिक वातावरण

शैक्षिक वातावरण छात्रों के सीखने के अनुभवों और परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें भौतिक बुनियादी ढाँचे, शिक्षण पद्धतियों, पाठ्यक्रम डिजाइन और शैक्षणिक संस्थानों के भीतर समग्र संस्कृति सहित विभिन्न कारक शामिल हैं। समग्र विकास को बढ़ावा देने, छात्र

सहभागिता बढ़ाने और शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए एक अनुकूल और समृद्ध शैक्षिक वातावरण बनाना आवश्यक है। शैक्षिक वातावरण भौतिक आधारभूत संरचना है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों को अच्छी तरह से डिजाइन और उचित रूप से सुसज्जित कक्षाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और अन्य सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए जो सीखने के विभिन्न तरीकों का समर्थन करती हैं। सीखने का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आरामदायक बैठने की व्यवस्था, पर्याप्त रोशनी, वेंटिलेशन और प्रौद्योगिकी तक पहुंच आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, खेल के मैदानों और खेल के मैदानों जैसे मनोरंजक स्थानों की उपलब्धता, शारीरिक कल्याण को बढ़ावा देती है और पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहित करती है।[3]

एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व शैक्षिक वातावरण में नियोजित शिक्षण पद्धतियाँ हैं। पारंपरिक तरीके, जैसे व्याख्यान और पाठ्यपुस्तकें, अभी भी प्रासंगिक हैं, लेकिन उन्हें नवीन दृष्टिकोणों के साथ पूरक करने की आवश्यकता है जो विविध शिक्षण शैलियों को पूरा करते हैं। सक्रिय शिक्षण रणनीतियाँ, सहयोगी परियोजनाएँ और व्यावहारिक अनुभव छात्रों को विषय वस्तु के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने, आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और रचनात्मकता को बढ़ावा देने की अनुमति देते हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी का एकीकरण, जैसे इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, शैक्षिक सॉफ्टवेयर और ऑनलाइन संसाधन, शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ा सकते हैं और सीखने को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बना सकते हैं।

शैक्षिक वातावरण भी शिक्षकों की गुणवत्ता और विशेषज्ञता से आकार लेता है। शिक्षक और प्रोफेसर सीखने के लिए सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके पास विषय वस्तु विशेषज्ञता, शैक्षणिक कौशल और बौद्धिक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर छात्रों से जुड़ने की क्षमता होनी चाहिए। शिक्षण के लिए एक सहायक और समावेशी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक छात्र सीखने के लिए मूल्यवान और प्रेरित महसूस करे। शिक्षकों के लिए चल रहे व्यावसायिक विकास के अवसर उन्हें नवीनतम अनुसंधान, शिक्षण तकनीकों और तकनीकी प्रगति से अवगत रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।[4]

2.1 शैक्षिक भौतिक वातावरण

किसी शैक्षणिक संस्थान का भौतिक वातावरण छात्रों के सीखने के अनुभवों और परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें भौतिक बुनियादी ढांचे, सुविधाएँ और संसाधन शामिल हैं जो शिक्षण और सीखने की गतिविधियों का समर्थन करते हैं। एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया और अनुकूल

भौतिक वातावरण छात्र सहभागिता, कल्याण और समग्र शैक्षणिक सफलता में योगदान देता है। शैक्षिक भौतिक वातावरण कक्षाओं और सीखने के स्थानों का डिजाइन और लेआउट है। छात्रों के लिए आरामदायक और स्वागत योग्य वातावरण प्रदान करने के लिए कक्षाएँ विशाल, अच्छी रोशनी वाली और उचित हवादार होनी चाहिए। छात्रों के बीच बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देने वाली पर्याप्त बैठने की व्यवस्था आवश्यक है। लचीले बैठने के विकल्प, जैसे डेस्क और कुर्सियाँ जिन्हें विभिन्न शिक्षण और सीखने की शैलियों को समायोजित करने के लिए पुनर्व्यवस्थित किया जा सकता है, छात्र जुड़ाव और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं।[5]

शैक्षिक भौतिक वातावरण में संसाधनों की उपलब्धता और पहुंच भी महत्वपूर्ण है। शैक्षणिक संस्थानों में पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिजिटल संसाधनों के विविध संग्रह के साथ अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय होने चाहिए जो विभिन्न विषयों और पढ़ने के स्तरों को पूरा करते हों। इन संसाधनों को उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीके से व्यवस्थित किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों के लिए आवश्यक जानकारी ढूंढना और उन तक पहुंचना आसान हो सके। इसके अलावा, भौतिक वातावरण को अनुसंधान, डिजिटल साक्षरता और मल्टीमीडिया सीखने की सुविधा के लिए कंप्यूटर, लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्टिविटी सहित प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करनी चाहिए।[6]

2.2 शैक्षिक वातावरण का महत्व

शैक्षिक वातावरण छात्रों के सीखने के अनुभवों और परिणामों को आकार देने में अत्यधिक महत्व रखता है। इसमें शैक्षणिक संस्थानों के भीतर भौतिक बुनियादी ढांचे, शिक्षण पद्धतियाँ, पाठ्यक्रम डिजाइन, सांस्कृतिक मूल्यों और समग्र वातावरण सहित विभिन्न कारक शामिल हैं। समग्र विकास को बढ़ावा देने, छात्र सहभागिता बढ़ाने और शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए एक अनुकूल और समृद्ध शैक्षिक वातावरण बनाना महत्वपूर्ण है। शैक्षिक वातावरण का छात्र प्रेरणा और जुड़ाव पर प्रभाव आवश्यक रूप से निहित है। एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया और प्रेरक वातावरण छात्रों को उनकी सीखने की यात्रा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकता है। जब कक्षाएँ आधुनिक तकनीक, आरामदायक बैठने की व्यवस्था और उचित शिक्षण संसाधनों से सुसज्जित होती हैं, तो छात्रों को अपनी पढ़ाई के बारे में प्रेरित और उत्साहित महसूस होने की अधिक संभावना होती है। इसके अलावा, एक ऐसा वातावरण जो सहयोग, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, छात्रों को अपने सीखने का

स्वामित्व लेने और सक्रिय रूप से नए विचारों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।[7]

शैक्षिक वातावरण भी छात्रों के समग्र कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शारीरिक रूप से सुरक्षित और सौंदर्य की दृष्टि से सुखदायक वातावरण उनके मानसिक और भावनात्मक कल्याण में योगदान दे सकता है। जब छात्र अपने सीखने के स्थान में सुरक्षित और आरामदायक महसूस करते हैं, तो वे अपनी पढ़ाई पर बेहतर ध्यान केंद्रित करने और अपने साथियों और शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, एक ऐसा वातावरण जो समावेशिता को महत्व देता है और विविधता का सम्मान करता है, अपनेपन और स्वीकृति की भावना को बढ़ावा देता है, सकारात्मक सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देता है और बदमाशी या भेदभाव की घटनाओं को कम करता है।

3. शैक्षिक भौतिक वातावरण एवं विद्यार्थी की उपलब्धि

किसी शैक्षणिक संस्थान के भौतिक वातावरण का छात्र की उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें भौतिक बुनियादी ढांचे, सुविधाएं और संसाधन शामिल हैं जो सीधे शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया और सहायक भौतिक वातावरण छात्र की व्यस्तता, प्रेरणा और समग्र शैक्षणिक सफलता को बढ़ा सकता है। शैक्षणिक भौतिक वातावरण छात्र प्रेरणा पर अपने प्रभाव के माध्यम से छात्र उपलब्धि को प्रभावित करता है। एक अच्छी तरह से बनाए रखा गया और सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन वातावरण एक सकारात्मक वातावरण बनाता है जो छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकता है। उज्ज्वल और स्वच्छ कक्षाएँ, सुव्यवस्थित पुस्तकालय, और दिखने में आकर्षक सामान्य क्षेत्र सभी एक स्वागत योग्य और अनुकूल वातावरण में योगदान करते हैं। जब छात्र सहज महसूस करते हैं और अपने परिवेश में व्यस्त रहते हैं, तो उन्हें कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने, असाइनमेंट पूरा करने और शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित होने की अधिक संभावना होती है।[8]

इसके अलावा, भौतिक वातावरण सीखने की प्रक्रिया में छात्र की सहभागिता को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कक्षाओं का डिजाइन और लेआउट छात्रों की बातचीत, सहयोग और भागीदारी को प्रभावित कर सकता है। बैठने की लचीली व्यवस्था जो समूह कार्य, चर्चाओं और प्रस्तुतियों की अनुमति देती है, सक्रिय सीखने और छात्र जुड़ाव को बढ़ावा देती है। आरामदायक फर्नीचर, उचित प्रकाश व्यवस्था और उपयुक्त कक्षा संसाधन एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जो फोकस और एकाग्रता का समर्थन करता है। जब छात्र सक्रिय रूप से अपने

सीखने में लगे होते हैं, तो उनके जानकारी को अवशोषित करने और बनाए रखने की अधिक संभावना होती है, जिससे शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार होता है।

4. शैक्षिक वातावरण के लिए भौतिक परिस्थितियाँ

शैक्षिक वातावरण में भौतिक परिस्थितियाँ एक अनुकूल और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन स्थितियों में प्रकाश व्यवस्था, तापमान, ध्वनिकी, वायु गुणवत्ता और स्थानिक लेआउट सहित विभिन्न तत्व शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक कारक सीधे छात्रों और शिक्षकों के आराम, जुड़ाव और समग्र कल्याण को प्रभावित करता है, जिससे उनकी प्रभावी ढंग से सीखने और सिखाने की क्षमता प्रभावित होती है।[9]

शैक्षिक वातावरण में प्रकाश भौतिक स्थितियों का एक महत्वपूर्ण घटक है। एकाग्रता को बढ़ावा देने, आंखों के तनाव को कम करने और एक दृष्टि से आरामदायक वातावरण बनाने के लिए पर्याप्त प्रकाश स्तर और उचित प्रकाश डिजाइन आवश्यक हैं। प्राकृतिक प्रकाश विशेष रूप से फायदेमंद है, क्योंकि यह मूड, फोकस और उत्पादकता को बढ़ाता है। प्राकृतिक प्रकाश प्रवेश को अधिकतम करने के लिए खिड़कियों और रोशनदानों की रणनीतिक नियुक्ति, चमक नियंत्रण के लिए समायोज्य ब्लाइंड्स या पर्दों के साथ मिलकर, एक इष्टतम प्रकाश वातावरण बनाने में मदद कर सकती है। इसके अतिरिक्त, कृत्रिम प्रकाश को पूरे स्थान पर समान रूप से वितरित किया जाना चाहिए, अंधेरे कोनों या अत्यधिक उज्ज्वल क्षेत्रों से बचना चाहिए। एलईडी लाइट्स जैसे ऊर्जा-कुशल प्रकाश समाधानों का उपयोग न केवल स्थिरता का समर्थन करता है बल्कि लगातार और उच्च गुणवत्ता वाली रोशनी भी प्रदान करता है।

तापमान नियंत्रण शैक्षिक वातावरण में भौतिक स्थितियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। उचित तापमान सीमा बनाए रखने से आराम, सतर्कता और एकाग्रता को बढ़ावा मिलता है। अत्यधिक तापमान, चाहे बहुत गर्म हो या बहुत ठंडा, ध्यान भटका सकता है और छात्रों की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न कर सकता है। तापमान और आर्द्रता के स्तर को नियंत्रित करने के लिए कुशल हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग (एचवीएसी) सिस्टम का होना महत्वपूर्ण है। पर्याप्त इन्सुलेशन, वेंटिलेशन और वायु परिसंचरण एक आरामदायक और स्वस्थ सीखने का वातावरण सुनिश्चित करता है। कक्षाओं या निर्दिष्ट तापमान क्षेत्रों में व्यक्तिगत तापमान नियंत्रण

व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं को समायोजित करने में मदद कर सकता है।[10]

5. शैक्षिक स्थान डिजाइन करना

शैक्षिक स्थानों को डिजाइन करना एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सावधानीपूर्वक योजना बनाना, विभिन्न कारकों पर विचार करना और उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की गहरी समझ शामिल है। शैक्षिक स्थान में कक्षाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, सामान्य क्षेत्रों, बाहरी स्थानों और आभासी शिक्षण प्लेटफार्मों सहित वातावरण की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इनमें से प्रत्येक स्थान शिक्षण और सीखने का समर्थन करने, सहयोग को बढ़ावा देने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और एक सकारात्मक और आकर्षक शैक्षिक अनुभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक दृष्टिकोण और सीखने के लक्ष्य। विभिन्न शिक्षण विधियों और निर्देशात्मक दृष्टिकोणों के लिए विभिन्न प्रकार के स्थानों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, लचीले फर्नीचर और समूह कार्य के लिए पर्याप्त जगह के साथ सहयोगात्मक शिक्षण स्थान छात्र-केंद्रित और परियोजना-आधारित शिक्षा के लिए आदर्श हैं। दूसरी ओर, ऐसे स्थान जो केंद्रित व्यक्तिगत कार्य की सुविधा प्रदान करते हैं, जैसे शांत अध्ययन क्षेत्र या व्यक्तिगत अध्ययन कक्ष, स्वतंत्र सीखने और एकाग्रता के लिए महत्वपूर्ण हैं। वांछित शिक्षण परिणामों का समर्थन करने वाला वातावरण बनाने के लिए डिजाइन को संस्थान या शिक्षकों के शैक्षिक दर्शन, लक्ष्यों और शिक्षण रणनीतियों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए।

शैक्षिक स्थानों को डिजाइन करते समय विचार करने योग्य एक अन्य महत्वपूर्ण कारक उपयोगकर्ताओं का आराम और कल्याण है। एक आरामदायक और आमंत्रित वातावरण सकारात्मक सीखने के अनुभव में योगदान देता है। इसमें प्रकाश व्यवस्था, तापमान नियंत्रण, ध्वनिकी और वेंटिलेशन जैसे कारक शामिल हैं। प्राकृतिक प्रकाश को मूड, फोकस और उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए जाना जाता है, इसलिए डिजाइन में पर्याप्त खिड़कियां और दिन के उजाले को शामिल करना फायदेमंद है। ध्वनिक विचार, जैसे ध्वनि-अवशोषित सामग्री और शोर हस्तक्षेप को कम करने के लिए सीखने के स्थानों की रणनीतिक नियुक्ति, एकाग्रता और संचार के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं। आरामदायक बैठने की जगह, एर्गोनॉमिक फर्नीचर और उचित भंडारण समाधान प्रदान करना भी छात्रों और शिक्षकों के शारीरिक कल्याण और आराम में योगदान देता है।[11]

6. पर्यावरण के मुद्दे

पर्यावरणीय मुद्दे गंभीर चिंताएँ हैं जो हमारे ग्रह के स्वास्थ्य, कल्याण और स्थिरता को प्रभावित करते हैं। ये मुद्दे मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होते हैं जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि और पारिस्थितिक तंत्र पर अन्य हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए इन पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। जीवाश्म ईंधन के जलने, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रक्रियाओं से वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों निकलती हैं, जो गर्मी को रोकती हैं और ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देती हैं। इसके दूरगामी परिणाम हैं, जिनमें बढ़ता तापमान, समुद्र के स्तर में वृद्धि, चरम मौसम की घटनाएँ और पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता में व्यवधान शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन करना और परिवहन, कृषि और उद्योग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना आवश्यक है।

जैव विविधता का नुकसान एक और महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दा है। आवास विनाश, प्रदूषण, अतिदोहन और आक्रामक प्रजातियों की शुरुआत जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण प्रजातियों की आबादी में उल्लेखनीय गिरावट आई है और पारिस्थितिक तंत्र का विनाश हुआ है। पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए जैव विविधता की रक्षा करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक प्रजाति पारिस्थितिक तंत्र के कामकाज में एक अद्वितीय भूमिका निभाती है। जैव विविधता के संरक्षण के लिए संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना, टिकाऊ संसाधन प्रबंधन और जागरूकता अभियान सहित संरक्षण प्रयास आवश्यक हैं।

प्रदूषण, अपने विभिन्न रूपों में, एक व्यापक पर्यावरणीय मुद्दा है। औद्योगिक उत्सर्जन, वाहन निकास और जीवाश्म ईंधन के जलने से वायु प्रदूषण श्वसन रोगों, धुंध और जलवायु परिवर्तन में योगदान देता है। औद्योगिक अपशिष्टों के निर्वहन, कृषि अपवाह और अनुचित अपशिष्ट प्रबंधन के कारण होने वाला जल प्रदूषण, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालता है। कीटनाशकों, रासायनिक उर्वरकों के उपयोग और अनुचित अपशिष्ट निपटान के परिणामस्वरूप होने वाला मृदा प्रदूषण, मिट्टी की गुणवत्ता को खराब करता है और कृषि उत्पादकता को प्रभावित करता है। प्रदूषण से निपटने के लिए स्वच्छ प्रौद्योगिकियों, अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं और उत्सर्जन और प्रदूषकों पर सख्त नियमों को अपनाने की आवश्यकता है।[12]

7. निष्कर्ष

स्कूल के माहौल, शिक्षक संतुष्टि और छात्र संतुष्टि के बीच संबंध एक जटिल और पारस्परिक रूप से मजबूत करने वाला गतिशील है। सकारात्मक स्कूल माहौल को प्राथमिकता देकर, शैक्षणिक संस्थान एक सामंजस्यपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र बना सकते हैं जहां शिक्षक और छात्र फलते-फूलते हैं, जिससे शैक्षिक परिणामों में सुधार होता है और समग्र संतुष्टि मिलती है। इन रिश्तों को संचालित करने वाले विशिष्ट तंत्रों की गहराई से जांच करने और विभिन्न सांस्कृतिक और प्रासंगिक सेटिंग्स में संभावित विविधताओं का पता लगाने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. अबिओडुन, एम.जी., गबाडेबो, ओ. और एडेजुमो (2015) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि पर आयु और कार्य अनुभव का प्रभाव: कैरियर परामर्श के लिए निहितार्थ, एशियाई आर्थिक और सामाजिक समाज।
2. भुइयां, बी., और चौधरी एम. (2018)। कॉलेज शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि, जर्नल साइको, 33, 123-127।
3. भुइयां, एम.ए.यू. (2017)। सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी से संतुष्टि का स्तर। ढाका विश्वविद्यालय, बांग्लादेश
4. एम्बर जी, और मैके (2016), एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स व्यावसायिक विकास केंद्र या वयस्क अंग्रेजी भाषा सीखने वालों के साथ काम करने वाले अनुभवी शिक्षक, सेंटर या एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स 4646 0वीं स्ट्रीट डब्ल्यू वाशिंगटन, सी 20016-1859।
5. कैम्पबेल, डी. एफ. (2016)। नया नेतृत्व अंतर: प्रशासनिक पदों में कमी। कम्युनिटी कॉलेज जर्नल, 76(4), 10-14।
6. चैपल, एस.के. (2015)। सामुदायिक कॉलेज के मुख्य अनुदेशक अधिकारियों द्वारा रिपोर्ट की गई संगठनात्मक जलवायु और नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंध। डॉक्टरेट शोध प्रबंध, फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, गेन्सविले।
7. चैन, एच., और यू. सी. (2020)। कॉर्पोरेट सांस्कृतिक विकास और संगठनात्मक प्रतिबद्धता के बीच सहसंबंध - अधिग्रहीत कंपनियों के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सिस्टम्स ताइवान, जुलाई अंक, 249-270
8. अफिजल, ए और रफीदा, एस, (2019) शिक्षक-छात्र लगाव और काम के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण, जर्नल पेंडिडिक डान पेंडिडिकन, जिल। 24, 55-72.
9. बास, एम. बी, और बैरेट, डी, (2017) निर्णयात्मक भागीदारी और शिक्षक संतुष्टि, शैक्षिक प्रशासन त्रैमासिक, 8, 44-48।
10. बर्नार्ड एन. और कुलंदिवल के. (2016) कोयंबटूर में स्नातक शिक्षकों के बीच नौकरी से संतुष्टि का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन।
11. भोगले, एस. (2018) शिक्षकों के व्यावसायिक दृष्टिकोण और नवाचारों की उनकी स्वीकृति, भारतीय शैक्षिक समीक्षा - एक शोध पत्रिका।
12. ब्लड, एम.आर. (2019)। कार्य मूल्य और कार्य संतुष्टि. जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 53, पीपी 456-459।

Corresponding Author

Ravishankar Singh*

Researcher, Capital University, Koderma